International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 3; May 2017; Page No. 04-06

कृष्ण चरित के विविध आयाम

डॉ0 अनन्त कुमार यादव

अध्यक्ष, दर्शन विभाग, इन्स्टीट्यूट ऑफ ऑरियण्टल फिलोसोफी, वृन्दावन, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

'कृष्ण' संज्ञा के स्पष्टीकरण के पश्चात संक्षिप्त रूप से इस बिन्दु पर विचार करें कि भागवत सम्प्रदाय की ऐतिहासिकता क्या है ? वस्तुतः ब्राह्मण धर्म के जटिल कर्मकाण्ड और यज्ञीय व्यवस्था के विरूद्व प्रतिक्रिया स्वरूप उदय होने वाला पहला सम्प्रदाय 'भागवत सम्प्रदाय' था। एक मानवीय नायक वासुदेव कृष्ण के प्रति भक्ति एवं उपासना इस सम्प्रदाय का केन्द्र बिन्दु है और आगे चलकर इसका विकास वैष्णव सम्प्रदाय के रूप में हुआ। उल्लेखनीय है कि वासुदेव कृष्ण का प्राचीनतम् संदर्भ छान्दोग्य उपनिषद से प्राप्त होता है, जहाँ उन्हें अंगीरस गोत्र के ऋषि घोरा का शीष्य एवं देवकी पुत्र बताया गया है। जबकि जैन ग्रन्थ उत्तराध्ययन सूत्र में इन्हे वाइसवें तीर्थकर अरिष्टनेमि का समकालीन बताया गया है।

किन्तु मानवीय नायक के रूप में वासुदेव के दैवीकरण का सबसे प्राचीन संदर्भ पाणिनी के अष्टाध्यायी से प्राप्त होता है। वस्तुतः ऐतिहासिक संदर्भो के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि उत्तर वैदिक काल में कृष्ण की पूजा प्रारम्भ हो चुकी थी। कुछ यूनानी लेखको – मेगस्थनीज, कर्टियस एवं स्ट्रेबो ने सूरसेन प्रदेश में वासुदेव कृष्ण (हेराक्लेस) की पूजा करने का उल्लेख किया है। परम्परानुसार वासुदेव कृष्ण का जन्म शूरसेन जनपद के अंधक वृष्णि संघ में हुआ था और महाभारत युद्ध के समय ये इस संघ के संघ प्रमुख थे पर कालान्तर में भागवत सम्प्रदाय के अनुयायियों ने उन्हें सर्वोच्च देवाधिदेव या परब्रहम की स्थिति प्रदान कर दी। उल्लेखनीय है कि श्री कृष्ण और बृज के अनन्य सम्बन्ध और इसी ब्रज क्षेत्र में उनके चरित को एक रूपक के माध्यम से एक भक्त इस प्रकार व्यक्त करता हैः–

ब्रज समुद्र मथुरा कमल, वृन्दावन मकरन्द।
बृज वनिता सब पाखुरी, मधुकर नन्द।।

जहाँ तक कृष्ण चरित के विविध आयाम का सवाल है तो इस सन्दर्भ में मेरा कहना है कि व्यावहारिक व अध्यात्मिक जगत के महानायक योगेश्वर श्री कृष्ण के व्यक्तित्व के इतने अधिक पहलू है कि जिन्हे ज्ञानीयों, भक्तों व योगियों ने अपने – अपने ढ़ग से समझने का प्रयास किया, फिर भी यह दावा नही किया जा सकता है कि श्री कृष्ण के व्यक्तित्व के सभी पहलुओं को समझ लिया गया है। वास्तव में प्रस्तुत सन्दर्भ में मैं भी श्री कृष्ण चरित्र के विविध पहलुओं को उभारने का एक लघु प्रयास किया है।

ज्ञातव्य है कि इनके व्यक्तित्व का एक सर्वविदित पहलू यह था कि माता – पिता, परिवार एवं गुरू के प्रति एक व्यक्ति का जो दायित्व होता है उसे वे बखूबी निभाये है। एक तरफ जन्म देने वाली माँ देवकी व पिता वसुदेव को जेल से मुक्त कराकर पुत्र धर्म का निर्वाह किया, तो वहीं दूसरी ओर पालक माँ यशोदा व पिता नन्दबाबा को अपने प्रेम व कृत्य द्वारा गौरवशाली आसन पर आरूढ़ किया। इसीप्रकार अपने परिवार के अन्य सदस्यों के प्रति अपने दायित्व को वखूबी निभाया है। इसीप्रकार अपने गुरू सान्दीपनी को गुरूदक्षिणा के रूप में उनके मृत पुत्र को पुनः जीवित अवस्था में सौपकर गुरू शिष्य परम्परा व धर्म का आदर्श निर्वाह किये है।

साथ ही कृष्ण के व्यक्तित्व का एक अन्य आयाम प्रेमी, सखा और आदर्श मित्र के रूप में देखा जा सकता है। गोपियों के साथ प्रेमीभाव जहाँ सर्वविदित है वहीं अर्जुन के प्रति सखाभाव और सुदामा के साथ मित्र की भूमिका मानवीय व्यवहार का उच्चतम प्रतिमान है। उल्लेखनीय है कि गोपियों के साथ रचा गया महारास लौकिक न होकर पूर्णतः अलौकिक था। वस्तुतः इस महारास के द्वारा वे प्राणिमात्र को यह सन्देश देना चाहते थे कि सभी लौकिक वृत्तियों को छोड़कर भगवन्मय हो जाये तो उसे अन्ततः भगवान की प्राप्ति होती है। वस्तुतः इस प्रकरण को एक दृष्टान्त द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है। एक बार मीरा अपने वृन्दावन प्रवास के दौरान श्री जीवी गोस्वामी जी से मिलने के लिये अनुमति माँगी तो संत जीवी गोस्वामी जी ने यह कहकर मीरा से मिलने से इंकार कर दिया कि मैं किसी स्त्री से नही मिलता। इसके प्रत्युत्तर में मीरा ने एक सन्देश लिखकर भेजा जो निम्न था :–

परमपुरूष श्री कृष्ण है, और सकल हैं नारि।
वृन्दावन दूजो पुरूष, को तुम कहो विचारि।।

अर्थात् इस वृन्दावन में कोई पुरूष है तो वह एक मात्र श्री कृष्ण है, तो फिर दूसरा पुरूष होने का दावा करने वाले तुम कहा से आ गये। जैसे ही यह पंक्ति वह सन्त पढ़ा उसे आत्म ज्ञान हो गया और मीरा के भक्तिभाव में डूब गया। इसप्रकार महारास या गोपी प्रेम का भाव कृष्ण के व्यक्तित्व का विभु व आध्यात्मिक पहलू है। इसी प्रकार अपने सखा अर्जुन का विपरीत से विपरीत परिस्थितियों में साथ देकर मानवता को एक धनात्मक संदेश दिया वहीं अर्जुन को उसके कर्तव्य का बोध कराने के निमित्त जो विचार प्रस्तुत किया वह गीता के रूप में हमारे सम्मुख विधमान है और यह अनन्त काल तक समस्त मानवता का मार्गदर्शक ग्रन्थ बना रहेगा। साथ ही सुदामा के साथ निभाया गया मैत्री व्यवहार बहुकोणीय एवं अत्यन्त व्यवहारिक (Pracital) दृष्टान्त है, जिसे हम सभी लोगों को अपने दैनिक व्यवहार में उतारना चाहियें और यदि हम ऐसा करेंगे तो निश्चय ही प्राणिजगत के सौन्दर्य में वृद्धि होगी।

आगे श्रीकृष्ण व्यक्तित्व का एक आयाम वैज्ञानिक, पर्यावरणविद् और प्रकृति प्रेमी के रूप में देखा जा सकता है। जब वे नन्दबाबा से जिद करके गोवर्धन की पूजा कराते है तो निश्चिय ही यहाँ उनका दृष्टिकोण पर्यावरण व प्रकृति प्रेमी के रूप में उभरकर सामने आता है। वस्तुतः गोवर्धन पर्वत एक ऐसी प्राकृतिक संपदा थी जिससे गौ सम्बर्धन और अन्य आर्थिक गतिविधिया सम्पादित होती थी। यहाँ कृष्ण का दृष्टिकोण अत्यन्त व्यवहारिक व समसामयिक है। इसीप्रकार कालीयनाग को यमुना के कुण्ड से रमणक द्वीप भेजकर जल को विषमुक्त किया, जिसके फलस्वरूप यमुना का यह घाट गायों व अन्य जीव जन्तुओं के लिये उपयोगी हो सका। हमारा अभिमत है कि यहाँ कृष्ण का पर्यावरण व प्रकृति प्रेम स्वतः स्पष्ट

है। ध्यातव्य है कि समकालीन वैज्ञानिक खोजों से यह स्पष्ट हो गया है कि संगीत की मधुर स्वर लहरों से केवल मनुष्य ही आह्लादित नहीं होता है बल्कि पशु पक्षी और पौधे भी स्वस्थ व पुष्ट होते है। कहने का तात्पर्य यह है कि यदि समकालीन दृष्टिकोण से कृष्ण चरित के आयाम पर विचार करें तो कृष्ण के द्वारा प्रकृति के आँचल में वासुरी वादान का आध्यात्मिक और व्यवहारिक दोनों पहलू दिखायी पड़ता है। व्यवहारिक पहलू में हम यह दिखा सकते है कि इनके वासुरी वादन से पेड़, पौधो, गायों एवं अन्य जीव– जन्तुओं का किसी न किसी रूप में सम्वर्धन ही होता रहा है। यहाँ ध्यान रहे कि हमारे धर्मग्रन्थो में वासुरी के लिये तीन शब्दों का प्रयोग किया है :–

1) **वंशी** – इससे निकलने वाली स्वर लहरी की प्रकृतिगत उपयोगिता थी, फलतः इसके स्वर को व्यवहारिक स्वर कहा गया।
2) **वेणु** – इसके स्वर को आध्यातमिक स्वर कहां गया है जबकि
3) **मुरली** – जिसका स्वर सौन्दर्यबोधक है और अपने अद्भुत सौन्दर्य से कामदेव को भी फीका कर देती है। इसप्रकार हम कह सकते है कि नृत्यकला, संगीत, वैज्ञानिकता, पर्यावरण व प्रकृतिप्रेम – कृष्ण के व्यक्तित्व का एक आयाम रहा है। साथ ही कृषि, इससे सबद्ध क्षेत्रो व ग्रामीण अर्थव्यवस्था के संवर्द्धन कर्त्ता के रूप में भी कृष्ण को देखा जा सकता है।

उल्लेखनीय है कि श्री कृष्ण के व्यक्तित्व का एक सर्वविदित पहलू यह है कि वे अर्जुन के माध्यम से समस्त मानवता को गीता का उपदेश दिये। वस्तुतः उपदेशक, अधर्म विनाशक और धर्म संस्थापक के रूप में इनके व्यक्तित्व का एक पहलू उभरकर सामने आता है। भगवद्गीता भगवान कृष्ण द्वारा अर्जुन को बछड़ा बनाकर उपनिषदरूपी गायों से दुहा गया अमृत दूध है जिसे सुधीजन पीते है।

सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः।
पार्थो वत्सः सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत्।।

स्पष्ट है कि गीता में ज्ञान का सन्देश, कर्म का सन्देश और भक्ति का सन्देश प्रस्तुत किया गया है। श्रीमद्भगवद गीता में अध्याय 1 से 6 तक कर्म की विवेचना, 7 से 12 तक भक्ति का सन्देश और 13 से 18 तक ज्ञान का सन्देश दिये है। अपने कर्म के सन्देश में श्रीकृष्ण कहते है कि –

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचान।
मा कर्मफल हेतु र्भूमा ते सडगोंस्तवकर्मणि।।

अर्थात् तेरा कर्म करने में ही अधिकार है उसके फलो में कभी नहीं। इसलिये तू कर्मो के फल का हेतु मत हो तथा तेरी कर्म न करने में भी आसक्ति न हों। इसी बात को प्रो0 एम. हिरियन्ना निम्न शब्दों में स्पष्ट किया है – "गीता कर्म के त्याग की बात नहीं करती बल्कि कर्म में त्याग की बात करती है।" इस प्रकार कर्म के सन्दर्भ में कृष्ण का उपदेश समस्त मानवता के लिये अत्यन्त उपयोगी है। इसी प्रकार ज्ञान के सन्देश में वे कहते है कि :–

"नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते"

अर्थात् इस संसार में ज्ञान से पवित्र कोई चीज नहीं है। साथ ही आगे वे कहते है :– ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिअचिरेणाधिगच्छति। जबकि भक्तिपरक सन्देश के निचोड़ में वे कहते है कि :–

सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं ब्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।।

अर्थात् सम्पूर्ण कर्तव्य कर्मो को मुझमें त्यागकर तू केवल एक मुझ सर्वशक्तिमान, सर्वाधार परमेश्वर की ही शरण में आ जा। मैं तुझे सम्पूर्ण पापों से मुक्त कर दूगा, तू शोक मत कर।

उल्लेखनीय है कि भक्ति की इसी समर्पण की अवस्था को एक शायर निम्न पक्तियों के माध्यम से अपनी भावना को व्यक्त किया है :–

मुझे सहल हो गयी मंजिले, (वो) हवा के रूख भी बदल गये।
तेरा हाथ, हाथ में आया, कि चिराग राह में जल गये।।
(भगत्कृपा से रोशनी मिल जाती है)

ध्यातव्य है कि श्री कृष्ण के चरित का एक विशिष्ट पक्ष समाजवाद के संस्थापक एवं नारी स्मिता के रक्षक के रूप में दिखता हैं। इनके समाजवादी व्यक्तित्व की छाप बाल्यकाल से लेकर अन्तिम समय तक रही है। बाल्यकाल में वे गोकुल पार मक्खन भेजने की प्रक्रिया रोककर समस्त ग्वालबालो के खाने पीने के स्तर में गुणात्मक सुधार का काम कियें। साथ ही सामान्य जनमानस को उन्होनें पूरा महत्व दिया। साथ ही नारी स्मिता की रक्षा और हर स्तर पर उनके मान को बनाये रखने के लिये वे जीवनपर्यन्त संघर्ष करते रहे। माँ स्वरूप में देवकी व यशोदा को जहाँ गौरान्वित किया, वहीं रूक्मिणी, सत्यभामा व जाम्बवती के साथ विवाह कर उनके मान एवं स्वातन्त्रय की रक्षा की। उनकी नारी के प्रति सकारात्मक एवं सम्मानपूर्ण व्यवहार की चरमपरिणति तब होती है जब भौमासुर का वध कर सोलह हजार राजकन्याओं को स्वयं अपनाया क्योंकि यदि ये स्वयं अपनाते नही तो परायी जगह रहने के कारण तत्कालीन समाज उन्हे तिरस्कृत ढ़ग से देखता। किन्तु कुछ आलोचको ने चीरहरण प्रसंग की नकारात्मक व्याख्या की है और नारी के प्रति किये गये अन्य कार्य के विपरीत चीरहरण प्रसंग को अनुचित कहा है। इस सन्दर्भ में मेरा अभिमत है कि किसी सरोवर या नदी में बिना वस्त्र के स्नान करना अमर्यादित माना जाता है। वहीं वे सूर्य नमस्कार प्रकरण के माध्यम से यह सन्देश देना चाहते है कि प्रेम में पूर्ण समर्पण होना चाहियें क्योंकि अलौकिक प्रेम की यह मांग है।

उल्लेखनीय है कि कृष्ण चरित्र का एक और महत्वपूर्ण आयाम कुशल योद्धा, रणनीतिज्ञ, व्यवस्थापक एवं राजनेता के रूप में देखा जा सकता है। वास्तव में उनका सम्पूर्ण जीवन दर्शन इस बात का स्पष्ट दृष्टान्त प्रस्तुत करता है कि वे कुशल योद्धा एवं रणनीतिज्ञ थे। पूतनावध, अरिष्टासुर का वध, कंस का वध, जरासन्ध को 17 बार युद्ध में पराजित करना, रूकमणी विवाह के समय शिशुपाल एवं अन्य राजाओं को पराजित करना आदि ऐसे दृष्टान्त है जो यह प्रमाणित करते है कि वे कुशल योद्धा एवं रणनीतिज्ञ थे। किन्तु भागवत पुराण के कुछ व्याख्याकारो ने कृष्ण का मथुरा छोड़कर द्वारिकापुरी के बसाने की घटना को नकारात्मक अर्थ में लेते है तथा कृष्ण पर जरासन्ध की भय से पलायनवादी होने का आरोप लगाते हैं। किन्तु मेरा अभिमत है कि इस घटना को व्यष्टिपरक अर्थ में न लेकर के उनके सम्पूर्ण जीवन प्रवाह के संदर्भ में देखे तो उपर्युक्त व्याख्याकारों की बात गले नही उतरती है। वस्तुतः कंस वध के पश्चात् उग्रसेन को गद्दी पर बैठाना, शिशुपाल वध के पश्चात उसके राज्य को उसके पुत्र को सौपना और संघर्षमय जीवन के पर्याय पाण्डवों का निरन्तर साथ देना और सम्पूर्ण महाभारत के युद्ध में उनकी भूमिका तथा गीता का सन्देश इस बात का पूर्ण तार्किक आधार प्रस्तुत करते है कि वे पलायनवादी नहीं थें। सच तो यह है कि वे मानव–प्रयत्न की महिमा को सार्थकता प्रदान करने के लिये ही मथुरा से द्वारिकापुरी गये।

जहाँ तक वयवस्थापक एवं राजनेता के रूप में उनकी भूमिका का सवाल है तो एक नये नगर द्वारिकापुरी की स्थापना इस बात का

पुष्ट आधार प्रदान करता है कि वे एक कुशल व्यवस्थापक थे। साथ ही इस सन्दर्भ में अनेक दृष्टान्त देखे जा सकते है। जहाँ तक राजनेता के रूप में उनकी भूमिका का सवाल है तो समपूर्ण महाभारत उन्ही के इर्द गिर्द घूमता दिखता है। स्पष्ट है, एक राजनेता के रूप में वे अपनी भूमिका का कुशल निर्वहन किये है। उन्होनें बड़ी ही कुशलता से भीष्म, द्रोण, कर्ण, दुर्योधन जैसे महारथियों का सफाया कर कुशल राजनीतिज्ञ के रूप में अपनी स्थिति को अक्षुण्य रखते है।

किन्तु कुशल राजनीतिज्ञ और धर्मसंस्थापक के रूप में उनकी भूमिकाओं को विवेचित करने पर स्पष्ट विरोध दिखायी पड़ता है। इसी विरोधाभास को पं. दीनदयाल उपाध्याय ने अपनी पुस्तक "राष्ट्र जीवन की दिशा" में कुछ यूँ रखाः–

"भीष्म को मारने के लिये शिखण्डी को खड़ा किया गया, द्रोणाचार्य को युद्ध समाप्त करने के लिये युधिष्ठिर ने झूठ बोला, कर्ण तब मारा गया जब वह अपने रथ का पहिया उठाने का अवसर माँग रहा था, जयद्रथ की मृत्यु का कारण सूर्य का बादलों में छिपना और दुर्योधन की मृत्यु भीम द्वारा कमर से नीचे गदा मारने से ही हुयी। इस आधार पर पूछा जा सकता है कि पाण्डवों की जीत के लिये ये सभी छल कार्य जो हुये, क्या उन्हें धर्मानुकूल कहा जायेगा ? "स्पष्ट है इन सभी कार्यो को कराने व प्रेरित करने में उस कृष्ण की भूमिका रही, जो स्वंय गीता के उपदेश में कहे है कि :–

"यदा यदाहि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम।।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दृष्कृताम्।
धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।।"

अर्थात् धर्म की स्थापना और अधर्म के विनाश के लिये युग – युग में मैं अवतार लेता रहता हूँ। स्पष्ट है विरोध साफ – साफ दिखता है। किन्तु हमारा अभिमत है कि यह विरोध वास्तविक नही बल्कि सतही है। इस बात को समझने के लिये कौरव व पाण्डव पक्ष पर पैनी नजर डालनी होगी। वस्तुतः दोनों पक्षो में एक मूलभूत अन्तर है, वह यह है कि कौरव पक्ष का प्रत्येक व्यक्ति व्यक्तिवादी था और इसीलिये अनर्थ का साथ दे रहा था। कौरव पक्ष का प्रत्येक महारथी अपने "मैं" के लिये लड़ रहे थे और इनका कोई समष्टिगत लक्ष्य नहीं था। भीष्म का शिखण्डी के सामने अस्त्र न उठाने की अपनी प्रतिज्ञा, कर्ण का दानवीरता के क्षेत्र में "मैं", द्रोण का निजी पुत्रमोह – आदि आदि प्रसंगो में इनके पराजय का कारण "मैं" था। जबकि पाण्डव पक्ष अपने अपने "मैं" को त्यागकर समष्टिगत लक्ष्य के लिये कार्य किये। कृष्ण सहित पाण्डव कई बार अपनी प्रतिज्ञाओं से विचलित हुये। इसलिये समष्टिवादी विचार धर्म का पक्ष हुआ और "मैं" का विचार या व्यक्तिवादी विचार अधर्म का पक्ष हुआ। ध्यातव्य है कि योगेश्वर कृष्ण कई बार अपने कृत्य द्वारा यह सन्देश देने का काम किया है कि "मैं" या अहंकार को त्यागो, तो निश्चय ही परमपद को प्राप्त होगे। इस बात का स्पष्ट दृष्टान्त राजसूय यज्ञ में सभी अतिथियों के पैर धोना, आदिवासी महिला के साथ विवाह करना व कुबजा का उद्धार करना आदि। इसलिये ठीक ही कहा गया है कि :–

"दिल में वसीं है तस्वीरे यार की"
"जब जरा गर्दन झुकी, दीदार कर लिया"

अन्त में "कृष्ण चरित के विविध आयाम" पर विवेचना करने के बाद स्पष्ट ज्ञान होता है कि कृष्ण जैसे व्यक्तित्व के सभी पहलुओं को उभारना सम्भव नहीं है। ये ज्ञान, भक्ति, कर्म आदि के उत्कृष्ट समन्वय है, तो वहीं सभी – सभी विशेषणों की पराकाष्ठा भी है। यदि गीता का सन्दर्भ करें तो यहीं समस्त जीवन व जगत के अधिष्ठान व स्रष्टा है। कण – कण में व्यक्त पूर्ण इकाई है। आप ही परब्रह्म हो, आप ही एक मात्र सत्य पूर्ण सर्वशक्तिमान सत्ता हो, जैसा कि बृहदारण्यक उपनिषद में कहा गया है कि :–

"पूर्ण मदः पूर्ण मिदं पूर्णात्पूर्ण मुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय मूर्ण मेवावशिष्यते।।

ठस प्रकार कण – कण में व्याप्त एक मात्र परमसत्ता तू ही है, कृष्ण ही है और इसका दर्शन अज्ञान के आवरण हटने के उपरान्त ही होता है। अज्ञान का पर्दा हटने के बाद :–

तू ही तू नजर आये, जिधर देखू उठा के आँख।
तेर जलवे के सिवा पेशे नजर कुछ भी न हो।।

ध्यातव्य है कि अद्वैत वेदान्ती मधुसूदन सरस्वती वृन्दावन आगमन पर परम तत्व श्री कृष्ण के सगुण स्वरूप का वर्णन निम्न पक्तियों के माध्यम से व्यक्त करते है जो एक परम ज्ञानी भक्त की उच्चतम् अभिव्यक्ति है जो श्री कृष्ण चरित्र के आयाम की पूर्णता व दिव्यता को व्यक्त करती हैः–

वंशी विभूषित करान्नवनीर दाभात्।
पीताम्बरा दरूण विम्ब फलाधरोष्ठात्।।
पुर्णेन्दु सुन्दर मुखादर विन्द नेत्रात्।
कृष्णात् परं किमपि तत्व महं न जाने।।